संस्थापित १८६७ ई०

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

एक प्रति ₹ २.००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) आजीवन शुल्क ₹ १०००

● वर्ष : १२३ ● अंक - ४२ ● १६ अक्टूबर २०१८ आश्विन शुक्ल पक्ष सप्तमी संवत् २०७५ ● दयानन्दाब्द १६४ वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १६६०८५३११६

बुराई पर अच्छाई की जीत का पर्व विजय दशमी

– डा0 धीरज सिंह, सभा प्रधान

- हम बुराई त्यागें, अच्छाई को अपनाये ।
- कमजोरों की मदद करें।
- अहंकार को मन से त्याग दें।

विजयदशमी का महोत्सब बड़ा महात्वपूर्ण और शिक्षाप्रद है। जिस प्रकार हिन्दू समाज में अन्य अनेक उपयोगी उत्सवों का ऊँचा स्थान है, उसी प्रकार विजयदशमी या दशहरा का भी। विजय दशमी का सम्बन्ध मर्यादा पुरूषोत्तम भगवान राम के आदर्श चरित्र से है। इस पवित्र दिन उन्होंने राक्षस राज रावण का सर्व संहार करने की अभय भावना से उस पर चढ़ाई करने का अटल आयोजन किया था। जो भी हो राम और रावण दोनों के चरित्र सामने हैं। एक ओर धर्म, सत्य, न्यायनिष्ठा और सदाचार है, दूसरी ओर इसके विरूद्ध अधर्म, असत्य, और अत्याचार। किसी ने बिल्कुल ठीक कहा है, कि अत्याचारों की अति से ईश्वर को बैर होता है।

अत्याचार कभी किसी का नहीं फला। रावण को भी उसकी अनीति का वही कुफल मिला, जो ऐसे कार्यों के लिए उसे मिलना चाहिए था। राम बनवासी थे, उनके पास सैनिकों और सामरिक सामग्री का आभाव था, परन्तु धर्म और सत्य उनके सहायक थे, इसी कारण उस असहायावस्था में भी उन्हें ऐसे–ऐसे सच्चे सहायक प्राप्त हो गये, जिन्होंने महाबली रावण के दांत खट्टे कर दिये और उसे उसकी करनी का फल चखाया। अभिमानी रावण को उसकी स्त्री, भाई तथा अन्य लोग समझाते हैं, परन्तु वह दुर्दम्य के दुर्ग में बैठ कर किसी की कुछ नहीं सुनता। अन्ततोगत्वा अपने पराये होकर सर्वदा के लिए उसका साथ छोड़ देते हैं। वनवासी राम विजयी होती हैं, और सत्ता धारी रावण पराजय को प्राप्त होता है।

हे शंकर! संसार में रहे न रावण राम।
दोनों के अवशिष्ट हैं, दूषित भूषित नाम।।

राम और रावण दोनों के चरित्र से मनुष्य बहुत कुछ सीख सकता है। कल्याण और अकल्याण दोनों का गूढ़ रहस्य उपर्युक्त चरित्रों में सन्निहित है। अनेक स्थानों में रामलीला करने का नियम है, यह लीला एक प्रकार से मेला या तमाशे का रूप धारण कर चुकी है। राम चरित्र को हम लोग अपने जीवन के सांचे में ढालें तो अपना और समाज का बहुत बड़ा उपकार कर सकते हैं। मार्यादा पुरूषोत्तम राम आदर्श पुरूष थे, वे तमाशे की चीज नहीं, उनके गुणों का यथार्थ स्मरण, और अनुसरण मनुष्य जीवन को ऊंचा उठाता है और उसे महत्वमय बनाता है। यदि हम वास्तव में रामभक्त हैं, तो हमें राम के पवित्र चरित्र से कुछ शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए और अनुरूप होकर राम का सच्चा अनुयायी सिद्ध करना चाहिए। ऐसा करने से ही हम असली अर्थ में राम के प्रेमी, भक्त और अनुयायी कहने का गौरव प्राप्त कर सकते हैं और तभी विजयादशमी का उत्साह पूर्वक मनाना कल्याणप्रद होगा।

श्रीमद् दयानन्द वैदिक गुरूकुल परिषद् का प्रथम अधिवेशन सम्पन्न

देश के समस्त गुरूकुलों की एकरूपता निश्चित हो
– स्वामी आर्यवेश

धार्मिक आर्यसिद्वान्त का पाठ्यक्रम अनिवार्य पढ़ावें
– प्रणवानन्द सरस्वती

संस्कृति, संसार, संस्कृत की रक्षा आर्ष पाठ्यक्रम से सम्भव
–डॉ0 आनन्द

सभी गुरूकुलों में सहयोग एवं आत्मीय भाव जागृत हो
– धर्मेश्वरानन्द सरस्वती।

हैदराबाद–३० सितम्बर, अन्तर्राष्ट्रीय गुरूकुल सम्मेलन में पूरे विश्व के गुरूकुलों की एकरूपता, संचालन, संरक्षण, संवर्द्धन द्वारा समाज के लिए सदुपयोग और विश्वस्तर पर आर्य समाज के विचारों का प्रचार–प्रसार करने के लिए तथा वैदिक परम्परा और मार्यादाओं में वेद प्रचार करने की दीक्षा देकर देश–देशान्तरों में वेद प्रचार करने की दीक्षा देकर "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" को साकार करना है इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए 'श्रीमद् दयानन्द वैदिक गुरूकुल परिषद्" की स्थापना की गई। उसका प्रथम अधिवेशन हैदराबाद की पुण्यभूमि पर सम्पन्न हुआ जहाँ आर्य समाज की अग्नि परीक्षा हुई थी १९३९ का "हैदराबाद सत्याग्रह" आर्य समाज का स्वर्णिम अध्याय है समर्पण और बलिदान का अध्याय है जिसे आज भी बड़े गौरव के साथ गाते हैं–

तेरे दीवाने जिस घड़ी दक्षिण दिशा को चल दिये।
हैरत में लोग रह गए दुश्मन का दिल हिला दिया।।
धन्य है तुमको ए ऋषि तूने हमें जगा दिया।
सो–सोकर लुट रहे थे हम तूने हमें बचा लिया।।

शेष पृष्ठ ६ पर

अन्तरंगाधिवेशन सूचना

सभी पदाधिकारियों, प्रतिष्ठित, सहयुक्त, अन्तरंग सदस्यों को सूचित किया जा है कि आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० की अन्तरंग सभा की बैठक दिनांक ०४–११–२०१८ दिन–रविवार (कार्तिक कृष्ण द्वादशी) को पूर्वाहन् ११.०० बजे से संस्था आर्य प्रतिनिधि सभा, नरायण स्वामी भवन, ५–मीराबाई मार्ग, लखनऊ में प्रधान/का० प्रधान– डॉ० धीरज सिंह जी की अध्यक्षता में सम्पन्न होगी। एजेण्डा एवं विस्तृत विषयों की रूप–रेखा सभी को डाक द्वारा भेज दी गई है। कृपया समय से उपस्थित होकर अधिवेशन को सफल बनायें।

–स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
सभा मंत्री

डॉ. धीरज सिंह
प्रधान/संरक्षक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री/प्रधान सम्पादक

सम्पादकीय.....

महर्षि दयानन्द का राष्ट्रवादी एवं राजनैतिक दृष्टिकोण

महर्षि दयानन्द प्रखर राष्ट्रवादी संत थे। भले अधिकांश जन उन्हें केवल धर्म की परिधि तक सीमित रखकर धर्मगुरू स्वीकारते हैं किन्तु धर्म की परिधि तक सीमित रखकर धर्मगुरू स्वीकारते हैं किन्तु राष्ट्र एवं राष्ट्रीयता के प्रति उनके विचार शीर्षस्थ कहे जाने वाले राजनेताओं की तुलना में अधिक श्रेष्ठ हैं। वह राष्ट्रीय नवजागरण के पुरोधा थे जिन्होंने उद्घोषणा की थी कि "भारत भारतीयों के लिए है तथा स्वराज सुराज से श्रेष्ठ है" महर्षिकृत ग्रन्थों में सर्वत्र न्यायपूर्ण निष्पक्ष शासन पद्धति की वकालत की गयी है। उनकी दृष्टि में प्रजातंत्र शासन व्यवस्था सर्वोत्तम है किन्तु दोषरहित वंशानुगत राजतंत्र के प्रति भी उन्होंने सहमति व्यक्त की है। शासनतंत्र का संचालन आप्त पुरूषों की मंत्रिपरिषद द्वारा किया जाना चाहिए जिसमें राजार्य सभा, धर्मार्थ सभा तथा न्याय सभा का गठन निहित हो। सैन्य व्यवस्था में बलिष्ठ पराक्रमी, युद्ध कला प्रवीण राष्ट्रभक्त योद्धाओं की नियुक्ति हो। इन योद्धाओं को आग्नेयास्त्र, प्रक्षेपास्त्र, युद्धक विमान, व्यूहरचना सहित रणकौशल में महारत हासिल हो। युद्ध में शत्रुओं को परास्त करना, संधि–मैत्री करना तथा अपने अनुकूल बनाना राष्ट्ररक्षा का मूल मंत्र होना चाहिए।

न्याय व्यवस्था के अंतर्गत महर्षि द्वारा कठोर दण्ड विधान कायम करने व तदनुसार अपराध का वर्गीकरण कर उचित दण्ड देने पर जो दिया गया। अज्ञानी की अपेक्षा ज्ञानी को, निम्नपदधारी की अपेक्षा उच्चपदधारी को उत्तरोत्तर अधिक दण्ड मिलना चाहिए। शासन के मुखिया को अपराध करने पर सबसे अधिक कठोर दण्ड मिले।

महर्षि दयानन्द ने भारत को विश्व के देशों का सिरमौर बताया क्योंकि यहां की धरा शस्य–श्यामला रही है। यहां हर प्रकार की फसलों, वनसम्पदा, खनिज–संसाधनों का प्रचुर भण्डार है। देश की सतत् प्रवाही नदियों ने इसे सर्वश्रेष्ठ कृषि प्रधान देश होने का गौरव प्रदान किया है। जहाँ किसान राजाओं का राजा कहा जाता है। कृषि हमारी अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। पशुपालन व कृषि आधारित उद्योग इसे सुदृढ़ बनाते हैं। गोपालन, गोवंशसंवर्द्धन की महन्ता का विशद विवेचन महर्षि के 'गोकरूणानिधि' नामक ग्रन्थ में मिलता है जो अथर्ववेद के सार के रूप में प्रणीत है। यदि महर्षि प्रणीत ग्रन्थों को अनुशीलन कर उन्हें व्यवहार में उतारा जाय तो भारत पुनः सोने की चिड़िया बन जायेगा।

अन्य अवदान– उपर्युक्त के अलावा दर्शन, भाषा, विज्ञान आदि के क्षेत्र में भी महर्षि दयानन्द के विचार यकदम शोधपूर्ण, विज्ञानपरक व व्यवहार जन्य सिद्ध होते हैं। महर्षि ने संस्कृत को विश्वभाषाओं की जननी माना और हिन्दी को उसकी दुहिता के रूप में विकसित करने की बात कहीं। संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान होकर भी स्वामी जी.ने अपने सभी ग्रन्थों की रचना हिन्दी भाषा में की। प्रथम कृति सत्यार्थ प्रकाश के हिन्दी में लिखने का मूल मन्तव्य कम शिक्षितों, अंधविश्वासियों व शोषित समाज के बहुसंख्यक जनों तक अपनी बात पहुंचाने का था। अपनी द्वितीय कृति ऋग्वेद भाष्य भूमिका में दयानन्द जी ने सूत्र रूप में सौर मण्डल की उत्पत्ति से लेकर विमान विद्या तक का उल्लेख किया है। जिसका आधार वैदिक ग्रन्थ है। आज गंदे एवं अश्लील साहित्य का प्रचार–पुस्तकों से लेकर मीडिया के द्वारा किया जा रहा है। महर्षि जी ने काफी पहले इसके प्रति हमें सचेत करते हुए पठनीय एवं अपठनीय ग्रन्थों की सूची प्रकाशित कर अपनी दूरदर्शिता प्रकट की। पुराणें मुगलकालीन रचनायें है जिनमें कपोल कल्पित तर्क विहीन, अश्लील, अवैज्ञानिक कथाओं का प्रचुर भण्डार है। कालजयी ऐतिहासिक व सामाजिक प्रबंधकाव्यों बाल्मीकि रामायण, व्यासकृत महाभारत, मनुस्मृति, गीता आदि में प्रचुर प्रक्षेपण का संकेत भी महर्षि ने जगह–जगह पर किया है। यह प्रक्षेपित अंश पूर्वापर प्रसंग रहित है जिन्हें विद्वान व्याकरण के आचार्य पकड़ सकते हैं साधारण पढ़े लिखे व्यक्ति नहीं। चित्र (मूर्ति के बजाय यदि चरित्र की पूजा की जाए तो उत्तम होगा। तभी हमारी भावी पीढ़ी का निर्माण राम व कृष्ण जैसे युग पुरूषों की परिपाटी के अनुरूप हो सकेगा। कुल मिलाकर हम महर्षि दयानन्द को प्रथम वेदोद्धारक के रूप में पाते हैं जिन्होंने वैदिक धर्म को प्राचीनतम सिद्ध करते हुए इसे मानव मात्र के लिए कल्याणप्रद बताया है। शास्त्रार्थ महारथी के रूप में महर्षि ने सत्य सनातन वैदिक धर्म को विश्व के *तथाकथित धर्मों, सम्प्रदायों* से श्रेष्ठ सिद्ध करके दिखाया। सत्यार्थ प्रकाश के अंतिम चार समुल्लास इसकी पुष्टि करते हैं। महर्षि ने अपने नाम से कोई मत नहीं चलाया। एकेश्वरवाद की स्थापना की तथा अद्वैत, द्वैत विशिष्टताद्वैत का प्रबल खण्डन कर त्रैतवाद (ईश्वर, जीव व प्रकृति) की सत्ता–महत्ता सिद्ध की। दयानन्द जी का दृष्टिकोण "न दैन्यं न पलायनम्" होकर भी समन्वयपरक था। उनके विचारों में अतिवाद की जगह शान्ति मार्ग अपनाने, नास्तिकता, बहुदेवतावाद की जगह एकेश्वरोपसना करने, धर्म व विज्ञान को परस्पर पूरक मानने, शारीरिक, अध्यात्मिक व सामाजिक उन्नति के समन्वित प्रयास से समस्त संसार का उपकार करने का उदात्त भाव पिरोहित है। आर्य समाज की स्थापना का अभीष्ट महर्षि द्वारा बनाये गये इसके १० नियमों में निहित हैं। 'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामाया।' सर्वे भ्रदाणि पश्यन्तु मा कस्चित् दुःखभाग भवेत्।। "हे ईश सब सुखी हों कोई न हों दुखरी। सब हो निरोग भगवन् धनधान्य के भंण्डारी।। सब भद्रभाव देखें, कल्याण के पथिक हों।

दुखिया न कोई होवें सृष्टि में प्राणधारी"।। यह भावना केवल और केवल वैदिक प्रार्थना में मिलती है, विश्व के अन्य किसी मजहब सम्प्रदाय में नहीं।

।।ओ३म् शांतिः शांतिः शांति।। — सम्पादक

गतांक से आगे ....

सत्यार्थ प्रकाश

अथ सप्तमसमुल्लासारम्भः

प्रश्न - ब्रह्म और जीव जुदे हैं वा एक?

उत्तर- अलग-अलग हैं।

प्रश्न- जो पृथक-पृथक हैं तो-

प्रज्ञानं ब्रह्म।।१।। अहं ब्रह्मास्मि।।२।। तत्त्वमसि।।३।। अयमातमा ब्रह्म।।४।।

प्रश्न- वेदों के इन महावाक्यों का अर्थ क्या है?

उत्तर- ये वेदवाक्य ही नहीं हैं किन्तु ब्राह्मण ग्रन्थों के वचन हैं और इनका नाम महावाक्य कहीं सत्य शास्त्रों में नहीं लिखा। अर्थात् ब्रह्म प्रकृष्ट ज्ञान-स्वरूप है। (अहम्) मैं (ब्रह्म) अर्थात् ब्रह्मस्थ (अस्मि) हूँ। यहां तात्स्थ्योपाधि है, जैसे 'मञ्चाः क्रोशन्ति' मचान पुकारते हैं। मचान जड़ हैं, उनमें पुकारने का सामर्थ्य नहीं, इसलिये मंचस्थल मनुष्य पुकारते हैं। इसी प्रकार यहां भी जानना।

कोई कहै कि ब्रह्मस्थ सब पदार्थ हैं, पुनः जीव को ब्रह्मस्थ कहने में क्या विशेष है? इस का उत्तर यह है कि सब पदार्थ ब्रह्मस्थ हैं परन्तु जैसा साधर्म्ययुक्त निकटस्थ जीव है वैसा अन्य नहीं। और जीव को ब्रह्म के साथ तात्स्थ्य वा तत्सहचरितोपाधि अर्थात् ब्रह्म का सहचारी जीव है। इससे जीव और ब्रह्म एक नहीं।

जैसे कोई किसी से कहै कि मैं और यह एक हैं अर्थात् अविरोधी हैं। वैसे जो जीव समाधिस्थ परमेश्वर में प्रेमबद्ध होकर निमग्न होता है वह कह सकता है कि मैं और ब्रह्म एक अर्थात् अविरोधी एक अवकाशस्थ हैं। जो जीव परमेश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव के अनुकूल अपने गुण, कर्म, स्वभाव करता है वही साधर्म्य से ब्रह्म के साथ एकता कह सकता है।

प्रश्न- अच्छा तो इस का अर्थ कैसा करोगे? (तत्) ब्रह्म (त्वं) तू जीव (असि) है। हे जीव! (त्वम्) तू (तत्) वह ब्रह्म (असि) है।

उत्तर- तुम 'तत्' शब्द से क्या लेते हो?

'ब्रह्म'। ब्रह्मपद की अनुवृत्ति कहां से लाये?

'सदेव सोम्येदमग्र आसीदेकमेवाद्वितीयं ब्रह्म।' इस पूर्व वाक्य से। तुम ने इस छान्दोग्य उपनिषत् का दर्शन भी नहीं किया। जो वह देखी होती तो वहां ब्रह्म शब्द का पाठ ही नहीं है। ऐसा झूठ क्यों कहते? किन्तु छान्दोग्य में तो-

'सदेव सोम्येदमग्र आसीदेकमेवाद्वितीयम्।'

ऐसा पाठ है। वहां ब्रह्म शब्द नहीं।

प्रश्न- तो आप तच्छब्द से क्या लेते हैं?

उत्तर- स य एषोऽणिमैतदात्म्यमिदꣳ सर्वं तत्सत्यꣳ स आत्मा तत्त्वमसि श्वेतकेतो इति।। -छान्दो०।।

वह परमात्मा जानने योग्य है जो यह अत्यन्त सूक्ष्म इस सब जगत् और जीव का आत्मा है। वही सत्यस्वरूप और अपना आत्मा आप ही है। हे श्वेतकेतो प्रियपुत्र! तदात्मकस्तदन्तर्यामी त्वमसि।

उस परमात्मा अन्तर्यामी से तू युक्त है। यही अर्थ उपनिषदों से अविरूद्ध है। क्योंकि-

य आत्मनि तिष्ठन्नात्मनोऽन्तरो यमात्मा न वेद यस्यात्मा शरीरम्।
आत्मनोऽन्तरो यमयति स त आत्मान्तर्याम्यमृतः।।

-यह बृहदारण्यक का वचन है।

महर्षि याज्ञवल्क्य अपनी स्त्री मैत्रेयी से कहते हैं कि हे मैत्रेयि! जो परमेश्वर आत्मा अर्थात् जीव में स्थित और जीवात्मा से भिन्न है, जिस को मूढ़ जीवात्मा नहीं जानता कि वह परमात्मा मेरे व्यापक हैं, जिस परमेश्वर का जीवात्मा शरीर अर्थात् जैसे शरीर में जीव रहता है वैसे ही जीव में परमेश्वर व्यापक है। जीवात्मा से भिन्न रहकर जीव के पाप पुण्यों का साक्षी होकर उनके फल जीवों को देकर नियम में रखता है वही अविनाशीस्वरूप तेरा भी अन्तर्यामी आत्मा अर्थात् तेरे भीतर व्यापक है, उसको तू जान। क्या कोई इत्यादि वचनों का अन्यथा अर्थ कर सकता है?

'अयमात्मा ब्रह्म' अर्थात् समाधिदशा में जब योगी को परमेश्वर प्रत्यक्ष होता है तब वह कहता है कि यह जो मेरे में व्यापक है वही ब्रह्म सर्वत्र व्यापक है इसलिये जो आजकल के वेदान्ती जीव ब्रह्म की एकता करते हैं वे वेदान्तशास्त्र को नहीं जानते। — क्रमशः

धरोहर.......

आओ चलें स्वर्ग की ओर

- स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती

मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा
उ०प्र० लखनऊ
गुरूकुल पूठ, गढ़ मुक्तेश्वर-हापुड़
मो० ९८३७४०२१९२

पवित्र आत्मन! कल सत्संग में जैसी चर्चा चल रही थी कि स्वर्ग यदि कहीं है तो धरती पर ही है। इसे ढूंढने के लिए आपके किसी भी विशेष स्थान पर जाने की आवश्यकता नहीं है। अपने परिवारों को स्वर्ग बनाओ, अपने घर को स्वर्ग बनाओं, और अपने आपको भी स्वर्गीय बनाओं आर्य समाज के अच्छे उपदेशक थे अपने नाम के आगे स्व० स्वामी निरन्जन देवतीर्थ लिखा करते थे मैंने उनसे एक दिन पूछ ही लिया कि स्वामी जी आप स्व० नाम के साथ क्यों लिखते हैं। बोले आचार्य जी मेरी कोई त्रुटि बताओं मैंने बताया कि हमारे देश में जब लोग मर जाते हैं। तो उनके परिवार के लोग एवं अन्य सभी परिचित उसे स्व० कहते है। व्यवहारिक सा नहीं लगता है। तो वे बोले स्व० मरने के बाद किसने देखा मैं तो जीवित ही स्वर्ग में हूं और इसी लिए स्व० नाम के साथ लिखता हूं काका हाथरसी जी ने इस पर व्यंग्य करते हुए लिखा है–

"भारत में जो भी मरे वही स्वर्ग को जाये" यह भारत वर्ष में एक परम्परा सी बन गई है। लेकिन असली स्वर्ग कहां है? आप कभी भी कहीं भी परीक्षण कर लेवें– अन्न पुराना, घी नया, घर कुलवन्ती नार। आज्ञाकारी पुत्र हो, बस स्वर्ग निसानी चार।

जहाँ जिस परिवार में घर में अन्न का भण्डार सुरक्षित है और प्रतिदिन नया घी तैयार होता है अर्थात् गोमाता की सेवा से दूध प्राप्त किया जाता है। घर में सभी का स्वागत करने वाली सेवा करने वाली मधुरभाषिणी मातायें हो *तथा बच्चे अपने से बड़ों की आज्ञा का पालन* करने वाले हो सेवा करने वाले हो स्वस्थ एवं प्रसन्नचित रहते हो समझ लो वहीं पर स्वर्ग है। नरक नाम विशेष दुःख का नाम है। वह भी कहीं दूर नहीं है। उसी के पड़ोस में रहता है। उसकी भी एक विशेष पहिचान है–

रूखा भोजन, कर्जसिर, घर कुलक्षणी नार।
आये का स्वागत नहीं, बस नरक निशानी चार।।

नरक की भी चार ही पहिचान है जिस घर में भोजन में घी दूध नहीं मिलता तथा कर्ज सिर के ऊपर सदैव वढ़ा रहता है। और घर में देवी जी का प्रचण्ड स्वरूप रहता है। कोई भी व्यक्ति परिवार में जाये उसे स्वागत में मनस्ते अथवा बैठने को कोई न कहता हो तो समझो कि यहां संस्कारी बालक नहीं है। ऐसे घर में कौन जाना चाहेगा एक बार चला भी गया तो पुनः अन्य को भी जाने की सम्मति नहीं देगा *अतः अपने परिवारों को सुन्दर स्वर्ग बनाओ* आचार्य चाणक्य बड़े कठोर शब्दों में हमें एक चेतावनी देकर कहते है–

न विप्र पादोदक कर्दमानि न वेदशास्त्र ध्वनि गर्जितानि।
स्वाहा स्वधाकार विवर्जितानि शमशान तुल्यानि गृहाणि तानि।।

जिस परिवार में अतिथि यज्ञ होता है। वेदशास्त्रों के विद्वान आकर परिवार में भोजन करने से पूर्व पानी से पैर धोकर कीचड़ करते है तो घर पवित्र हो जाता है जिस परिवार में वेदमन्त्रों का पाठ किया जाता है अर्थात ब्रह्मयज्ञ होता है स्वाध्याय होता है। जिस परिवार में स्वाहा का उच्चारण होता है अर्थात् देवयज्ञ (हवन) होता है और जिस परिवार में पितृयज्ञ होता है छोटे बच्चे और युवा अपने बड़ों बुजुर्गों के चरण स्पर्श करके उनसे (स्वधा) आशीर्वाद लेते हैं। सेवा करते है छोटे लोगों को स्नेह दिया जाता है प्यार दिया जाता है बस ऐसे परिवार को ही आचार्य चाणक्य कहते हैं और जिस परिवार में उक्त विशेषताऐं नहीं हैं तो वे कहते हैं ऐसे परिवार शमशान भूमि के बराबर है। आचार्य चाणक्य ने परिवारों में एक अच्छा वातावरण बनाने के लिए ही इतने कठोर शब्दों का प्रयोग किया है वो चाहते हैं आप स्वर्ग की भ्रान्ति से ऊपर उठकर इसे क्षीर सागर से निकालकर परिवारों में स्थापित करों तभी तो ऋषि और मुनियों ने बताया है कि "स्वर्ग कामो यजेत्" यदि आपको विशेष सुख की इच्छा है तो यज्ञ करो अभी पंच महायज्ञ का वर्णन आचार्य चाणक्य जी कर रहे थे महर्षि स्वामी दयानन्द जी महाराज ने भी इसी प्रकार पंच महायज्ञों की अनिवार्यता पर जोर देकर कहा है कि आप दल यज्ञों में किसी भी प्रकार का आलस्य न होने देवें और अपने परिवारों में "पंचायतन देवपूजा" पांच देवों की पूजा को भी अनिवार्य बताया है।

पांच देवता इस प्रकार है १. मातृ देवोभय, २. पितृदेवो भव, ३. आचार्य देवोभव, ४. अतिथि देवो भव, ५. पति–पत्नि देवो भव। परिवार में सबसे प्रथम देवता माता जी का सम्मान अर्थात आज्ञापलन व सेवा करनी चाहिए, पिता जी की आज्ञा एवं नियमों का पालन करते हुए घार की उन्नति एवं सुखशान्ति स्थिर की जा सकती है। आचार्य अर्थात् अपने गुरूजनों की सेवा से विद्या प्राप्त कर ज्ञान का प्रकाश करके अज्ञान का विनाश हमारे परिवार ही नहीं समाज में एक नई क्रान्ति को जन्म दे सकता है इसी प्रकार जिस परिवार में अतिथियों का सम्मान व सेवा क्री जाती है। वहां भी विशेष सुख की अनुभूति होती है। तथा जिस परिवार में पत्नी के लिए पति और पति के लिए पत्नी के मन में सम्मान की भावना होती है एक दूसरे के लिए हृदय में स्नेह एवं प्रसन्नता होती है। वहां पर जाकर आप देख सकते हैं कि साक्षात् स्वर्ग विराजमान होकर सुख समृद्धि को बढ़ाता है परिवार में ईर्ष्या द्वेष समाप्त हो जाता है भाई–भाई परस्पर स्नेह पूर्वक जीवन यापन करते हैं एवं हमारे वृद्ध हमें आशीर्वाद प्रदान करते हैं ऐसा सुन्दर वातावरण एक दिन में ही नहीं बनता इसके लिए परिवार में अच्छे संस्कारों के लिए सभी को तपस्या करनी पड़ती है तपस्या का अर्थ नंगा रहना अथवा भूखे मरना नहीं अपितु वाणी का तप करके सबके मन को एक जैसा बनाने के लिए परिवार के सभी लोगों के सहयोग की आवश्यकता होती है एक साथ बैठकर एक योजना तैयार की जाये कि कल से सारे परिवार का परिवर्तन होना है उसके लिए आप अपने–अपने अहंकार को मुझे दान कर दीजिए फिर आपको परिवार का एक मुख्य व्यक्ति मुखिया बनाना होगा उसी की आज्ञानुसार सभी के सहयोग से घर के प्रत्येक कार्य में प्रातः काल से लेकर सायंकाल तक की दिनचर्या भी व्यवस्थित करनी होगी भोजन एवं वेशभूषा भी निश्चित करनी होगी फिर एकता को सुदृढ़ करके स्थिर करने के लिए जो भी त्याग जिससे अपेक्षि है उसे अपनाना होगा और "इदं न मम" की भावना जो भारतीय संस्कृति का मूलाधार है उसे पूरा करने के लिए जो भी पुरुषार्थ होगा उसे ही तपस्या कहा जोयगा और उस तपस्या की भट्टी में तपकर ही सोना कुन्दन बनता है हमारी भी यही स्थिति है हमें अपने जीवन को कुन्दन बनाना है।

मेरठ जिला आर्य महासम्मेलन मवाना में सम्पन्न

भवना, ५, ६, ७ अक्टूबर २०१८ को मेरठ जिला आर्य प्रतिनिधि सभा के माध्यम से मवाना में सम्पन्न हुआ प्रथम दिन यज्ञ के पश्चात् सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने ध्वजारोहण किया और उद्घाटन उद्बोधन देकर आर्य जनता का उत्साह वर्द्धन किय मध्याह्न में शोभायात्र द्वारा नगर में सम्मेलन का सन्देश दिया गया जिले की सभी समाजों ने भाग लेकर शोभा बढ़ाई रात्रि में अजय आर्य के संगीत का लाभ उठाया गया सभा में यज्ञोपरान्त स्वामी कर्मवीर जी की अध्यक्षता में ईश्वर वेद सम्मेलन हुआ जिसमें मु. अतिथि ठा. विक्रम सिंह जी, विशिष्ट अतिथि ओमवीर सिंह खानपुर एवं मु. वक्ता डा. वेदपाल जी आचार्य मेरठ संचालन मा. सत्येन्द्र आर्य खतौली रहे मध्यह्न में "राष्ट्र रक्षा सम्मेलन" वीरेन्द्र रत्नम् जी की अध्यक्षता में हुआ वि. अतिथि एवं मुख्य वक्ता सभा मन्त्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी रहे । स्वामी अखिलानन्द जी गु.पूठ ने भी ओजस्वी विचार रक्खे मंच पर डॉ.आर.पी. सिंह जी तथा स्वामी विजयानन्द जी एवं मुकेश आर्य प्रतिनिधि सभा प्रधान जी रहे सभा प्रधान जी का सन्देश आर्य जनता को सुनाया गया संचालन वेदपाल आचार्य मवाना ने किया।

रात्रि में भी सुभा मन्त्री जी ने सुप्रीम कोर्ट के निर्णय के विरूद्ध आर्य जनता की आवाज बुलन्द करने पर बल दिया समापन पर पूज्य स्वामी विवेकानन्द जी सरस्वती का आशीर्वाद मिला एवं श्री माया प्रकाश त्यागी जी का उद्बोधन हुआ इसके अतिरिक्त शोदान, विद्यासागर आर्य, राजेश सेठी, कर्नल पाल प्रमोद, सुनील आर्य राममुनि जी, सुखवीर सिंह, वेदराम आर्य, मदन सिंह सलेकचन्द्र आर्य, धर्मवीर सिंह, जगदेव आर्य, मुकेश आर्य निरंजन सिंह, अनुराज दुर्लालश, पवन सर्राफ, विजयपाल आर्य आदि–आदि जिले से अधिकारियों का सहयोग रहा।

सूचना

प्रदेश की समस्त आर्य समाजों को सहर्ष अवगत कराया जा रहा है अपने–अपने आर्य समाजों में वेद प्रचार सप्ताह के कार्यक्रम उत्साह और भव्यता के साथ सम्पन्न करायें।

सम्पन्न हुए कार्यक्रमों की सूचना फोटो सहित पूर्ण विवरण के साथ सभा कार्यालय को भेजें जिससे आर्यमित्र में प्रकाशित किया जा सके।

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
सभा मंत्री
सम्पर्क : 9837402192

हरीश कुमार शास्त्री
व्यवस्थापक
सम्पर्क : 9320622205

पर्वतीय क्षेत्र में महर्षि दयानन्द सरस्वती एवं आर्य समाज के अनुयाइयों द्वारा किए गए कार्य

– भुवन चन्द्र पाठक

गुजरात की धरती पर दो संतों ने जन्म लिया, राष्ट्रपिता महात्मा गांधी एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती। गांधी जी ने भारतवर्ष की गुलामी की बेड़ियों से मुक्त कराया एवं दयानन्द ने सम्पूर्ण भारतवर्ष में सामाजिक कुरीतियाँ, जात–पात का भाव मिटाया, स्त्री शिक्षा हेतु आर्य कन्या विद्यालायों को खुलवाया आदि। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने प्रथम आर्य समाज की स्थापना चैत्र शुक्ल प्रतिपदा सं० १६३२ वि० ७ अप्रैल, १८७५ को डॉ० गाणिक चन्द्र को वाटिका, गिरगाँव मुहल्ला बम्बई में सायं साड़े ५ बजे करायी थी। उसके उपरान्त उन्होंने सम्पूर्ण भारतवर्ष में भ्रमण कर देश में फैली कुरीतियों एवं आडम्बर का खण्डन करते हुए आर्य समाज के प्रचार–प्रसार में अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया।

ऋषि पूरे जीवन आजादी की जंग लड़ते रहे और खुलकर लड़ते रहे, अध्यक्ष सच्चे शिव की खोज में निकले दयानन्द अचानक ही पाठशालाएं खोलते न दिखाई देते और पाठशालाएं भी बेटियों के लिए। वे भली–भांति जानते थे कि समाज को जगाए बिना आजादी नहीं आ सकती और शिक्षा के बिना समाज को जगाना सम्भव नहीं है।

इस सत्य के अन्वेषक परम योगी सनत को जन्म देने का श्रेय मोरवी राज्य गुजरात के टंकारा ग्राम को है। यह सौभाग्यशाली दिन था शनिवार, फाल्गुन बदि दशमी, विक्रम संवत् १८१८ १२ फरवरी सन् १८२४। जब माता यशोदा बाई ने अपने प्रथम बेटे का नाम मूलजी रखा। पिता कर्षन जी तिवारी शंकर जी के अनन्य भक्त थे। वे बेटे को भी शैवमत का अनुयायी बनाना चाहते थे। चौदह वर्ष की आयु में ही मूलशंकर ने यजुर्वेद–संहिता को कण्ठस्थ कर लिया था। रूपावली आदि व्याकरण के छोटे ग्रन्थ पिता ने स्वयं ही बेटे को पढ़ा दिये।

फाल्गुन बदी चतुर्दशी, संवत् १८६४ सन् १८३७ की रात्रि बस्ती के सभी शिव भक्त अपने बच्चों के साथ शिवराधना के लिए मन्दिर की ओर प्रस्थान करने लगे। मूलशंकर भी पिता के साथ मन्दिर चला गया। पिता ने उसे पहले ही समझा दिया था कि जो भक्त पूरी रात जागरण करके शिव जी की आराधना करता है, उसे ही सुफल की प्राप्ति होती है। परन्तु उस समय उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब रात्रि का तीसरा प्रहर आरम्भ होते ही सारे शिव भक्त निद्रा की गोद में समाते चले गए। कर्षन जी भी वहीं लुढ़कर खर्राटे भरने लगे। मूलशंकर शीतल जल की सहायता से जागता रहा और विधिवत् शिवराधना में लगा रहा था। अवसर पाते ही चूहे अपने बिलों में से निकल कर शिव पिण्डी पर चढ़े प्रसाद का भोग लगाने लगे। यह सब देखकर पत्थर पूजा से मूलशंकर का मोह भंग हो गया। चूहों को अपने ऊपर चढ़ने से रोक पाने में *असमर्थ भगवान शिव को देखकर मूलशंकर* ने अपने पिताजी को जगा दिया और एक सीधा सा प्रश्न किया, पिता जी, यह कथा वाला ही शिव हैं या कोई दूसरा, क्योंकि वह अपने ऊपर चढ़ रहे चूहों को भी नहीं रोक पा रहा । आखिर चेतन शिव अपने ऊपर इन तुच्छ चूहों को क्यों चढ़ने देगा। कर्षन जी ने बेटे को समझाना आरम्भ किया, बेटे महादेव जी कैलाश पर्वत पर रहते हैं। कलियुग में उनके साक्षात दर्शन नहीं होते। इसलिए उनकी मूर्ति बनाकर आराधना करने से कैलाशवासी शंकर प्रसन्न हो जाते हैं। मूलशंकर ने विचार किया कि यह कथा वाला महादेव नहीं है।, इसलिए मै। इसकी उपासना नहीं करूंगा। मूलशंकर अभी सोलहवें वर्ष में प्रवेश कर रहा था कि घर में उसकी चौदह वर्षीय बहन की अचानक हैजा बीमारी के कारण मृत्यु हो गई। इस घटना से उसका मन में वैराग्य की अग्नि प्रज्जवलित होने लगी और घर के कार्यों में मन नहीं लगता। वह जन्म–मृत्यु के चक्कर से छूटने के उपाय सोचने लगा। माता–पिता को बालक के मन की भावना को समझने में देर न लगी, और बीसवें वर्ष में मूलशंकर का विवाह करने की तैयारी कर ली। परन्तु इधर मूलशंकर के मन में विचारों का तूफान खड़ा हुआ, वह घर– गृहस्थी के बन्धन से सदा के लिए छूटना चाहता था। उसके विचार में ऐसा किए बिना योग–सिद्धि के बिना मोक्ष का मार्ग प्रशस्त नहीं हो सकता था, जिसे प्राप्त करना उससे तय कर लिया था। वह मृत्यु पर विजय प्राप्त करना चाहता था। एक रात्रि घर के सभी लोग सो गये और मूलशंकर निकल गया। राह में मिले परिचित वैरागी ने अपने स्थान पर पहुंच कर कर्षन जी को पत्र लिख दिया। पत्र में उन्हें अवगत कराया कि आपका पुत्र घर त्याग कर चला आया है। उसके गेरूए वस्त्र धारण कर लिये हैं और अब सन्तों के दर्शन करने सिद्धपुर मेले की ओर जा रहा है। उन्हीं दिनों चप्पोद से लगभग एक कोस दूर जंगल में बने ठिकाने पर एक ब्रह्मचारी के साथ दण्डी स्वामी पृणवानन्द सरस्वती आ विराजे। विशेष अनुराग विनय करने के उपरान्त विधिवत उसी ठिकाने पर शुद्ध चैतन्य को दण्डी स्वामी पूर्णानन्द जी ने सन्यास की दीक्षा लेकर 'दयानन्द सरस्वती' नाम दिया। हरिद्वार में अनेक साधु संतों के साथ योग और अन्य शास्त्रों के संबंध में चर्चा की। जब तक कुम्भ का मेला चलता रहा तब तक चण्डी की पहाड़ी जंगलों में जाकर योगाभ्यास करते रहे। सन् १८७५ को क्रान्ति में थी स्वामी जी ने अलग–अलग स्थानों पर सुधार की ओर साधु–सन्तों के दिलों में क्रान्ति की ज्वाला प्रज्जलित की। जोशीमठ में ठहर कर साधु सन्तों से शास्त्र चर्चा करते हुए अलकनन्दा नदी के उदगम स्थान पर पहुंचे। अति शीत के कारण किसी प्रकार नदी पार की और अंधेरा अब गहराने लगा। वहां बैठकर कुछ देर विश्राम किया और फिर अलकनन्दा नदी के किनारे–किनारे चल दिए। रात आठ बजे वे बद्रीनारायण लौट आए। बद्रीनारायण से रामपुर होते हुए वे काशीपुर पहुंच गए। वहां द्रोणासागर और फिर मुरादाबाद गढ़मुक्तेश्वर के रास्ते गंगा के घाट पर आकर विश्राम किया। इस बीच उन्हें जो ग्रन्थ मिले उनमें एक ग्रन्थ नाड़ीचक्र के संबंध में था। उसका अध्ययन करते हुए गंगा तट पर उन्हें एक शव दिखाई दिया। शव को पकड़कर किनारे ले आए और अपना तेज धार का चाकू निकालकर शव का चीर–फाड़ आरम्भ किया और नाड़ीचक्र ग्रन्थ का अध्ययन किया। परन्तु ग्रन्थ में लिखे की पुष्टि न हो पाने के कारण उन्होंने ग्रन्थ को फाड़कर फूँक दिया। संवत् १९१७ कार्तिक शुदी २ सन् १८६० को स्वामी दयानन्द जी ने मथुरा पहुंचकर व्याकरण के सूर्य दण्डी स्वाबी विरजानन्द जी की कुटिया का द्वार खटखटाया और गुरू के चरणों में नतमस्तक हो गए। गुरू ने कहा दयानन्द यदि तुम मुझसे विद्याध्ययन करना चाहते हो तो तुमने अभी तक जितने भी अनार्ष ग्रन्थ पढ़े हैं उनका त्याग करना पड़ेगा। दयानन्द ने गुरूजी की आज्ञा का पालन करते हुए अनार्ष ग्रन्थों का त्याग करते हुए उन्हें यमुना नदी में बहा दिया। धीरे–धीरे दयानन्द के विनम्र स्वभाव, तेजस्वी व्यक्तित्व और विद्वता से मथुरावासी परिचित हो गये। प्रातः ब्रह्ममुहूर्त में साधना, योगासन, प्राणायाम का अभ्यास करना, संध्या उपासना करना यथा समय विद्याध्ययन के लिए गुरू–चरणों में उपस्थित हो जाना आदि। वे आदर्श गुरू के आदर्श शिष्य थे।

संवत् १६१२ सन् १८५५ में स्वामी जी सत्य की खोज में उत्तराखण्ड वापसी में बद्रीनाथ से यहां पधारे एवं उन्होंने पं० जुगदेव शर्मा का आतिथ्य स्वीकार किया। पं० जुगदेव शर्मा ने उन्हें असाधारण संन्यासी पाया, जिसकी सत्य ज्ञान की भूख अभी मिटी नहीं थी। वह बार–बार यही कहते– 'उत्तराखण्ड में ब्राह्मण विद्वान तो हैं किन्तु सत्य ज्ञान से अभी कोसों दूर हैं। मुझे सच्चा गुरू नहीं मिला।

विद्याध्ययन समाप्ति के उपरान्त गुरूदक्षिणा में देने के लिए दयानन्द के पास कोई वस्तु नहीं थी। उनके पास थोड़े लौंग थे। उन्हें गुरू को देना चाहा तो गुरू ने स्नेह का हाथ रखकर कहा– वत्स, लौंग मुझे नहीं चाहिए। गुरू दक्षिणा के लिए ये पर्याप्त नहीं हैं। दयानन्द ने कहा आज्ञा करें गुरूदेव मेरा तन और मन गुरू–चरणों में समर्पित है। दयानन्द ने चरण छूकर विनम्र निवेदन किया। दण्डी स्वामी ने चरण छूकर विनम्र निवेदन किया। दण्डी स्वामी ने गदगद स्वर में कहा– दयानन्द तुझसे मुझे यही आशा थी। देश में अज्ञान का अंधकार छाया हुआ है। कुरीतियों में फंसे लोग नरक–सी जिन्दगी जी रहे हैं। अंधविश्वास की जउत्रे गहरी हो गई हैं। वैदिक ग्रन्थों का पठन–पाठन चिन्तन–मनन विलुप्त हो गया है। विभिन्न मत मतान्तरों ने अपने पैर फैला लिये हैं। दीन–हीन समाज दुर्गति की ओर लुढ़कता चला जा रहा है। समाज को अधोगति से बचाओ। लोक कल्याण के लिए स्वयं को समर्पित करो। सोते देश को जागृत करो। इसके अतिरिक्त गुरू दक्षिणा में मुझे कुछ नहीं चाहिए। गुरूजी का आशीर्वाद लेकर दयानन्द जीवन भर समाज सेवा का संकल्प ले भारत भ्रमण पर निकल पड़े। सन् १८७४ ई० में प्रमुख ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की रचना की।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने पूरे देश में स्वतंत्रता संघर्ष के लिए वैचारिक क्रान्ति की। उसी का परिणाम था कि उस समय आजादी का कोई भी ऐसा आन्दोलन दिखाई नहीं देता जहाँ आर्य समाज की उपस्थिति न हो। भगत सिंह भी आर्य सामज से प्रभावित थे। घर छोड़ते हुए भगत सिंह द्वारा अपने पिता को लिखे गये पत्र के कुछ अंश.. जब मैं छोटा था तो बापू जी ने मेरे यज्ञोपवीत के वक्त एलान किया था कि मुझे खिदमते, वतन के लिए वक्फ कर दिया गया है। लिहाजा मैं उस वक्त की प्रतिज्ञा पूरी कर रहा हूँ। उम्मीद है आप मुझे माफ फरमाएंगे। आपका ताबेदार भगत सिंह।

स्वामी जी को महाराजा जोधपुर यशवन्त सिंह का निमंत्रण मिला। उन्होंने स्वीकार कर लिया। स्वामी जी के भक्तों ने उनसे निवेदन किया कि वे वहां न जाएं। जोधपुर नरेश वेश्यागामी है। आप सत्य कहने से नहीं हटेंगे। आपका वहां जाना उचित नहीं है। स्वामी जी ज्येष्ठ बदि अष्टमी सन् १८८३ को जोधपुर चले गए। वहां राज्य की ओर से उनका भव्य स्वागत हुआ। एक दिन स्वामी जी ने देखा कि एक नन्हीं जान नामक वेश्या महाराजा यशवन्तसिंह के महल में उपस्थित है। स्वामी जी ने महाराज से प्रथम यही चर्चा की। उन्होंने कहा कि महाराज आप स्वयं को पहचानने का प्रयास करें। प्रजा का पालन–पोषण और उनकी सुख–सुविधा का ध्यान रखना आपका प्रथम कर्तव्य है। यदि राजा ही अपने धर्म से पतित हो जाए तो प्रजा का क्या होगा। वेश्यागमन निन्दनीय कर्म है। स्वामी जी के उपदेश से नन्हीं जान एवं महाराज की दूरियां बनने लगी। वेश्या को अपनी प्रतिष्ठा धूल में मिलती दिखई दी। इस घटना का परिणाम यह हुआ कि नन्हीं जान ने अपने तिरस्कार का प्रतिशोध लेने का दृढ़ निश्चय कर लिया।

शेष पृष्ठ ५ पर

पृष्ठ ४ का शेष

पर्वतीय क्षेत्र में महर्षि दयानन्द सरस्वती एवं ...

यूँ तो स्वामी जी को विरोधियों द्वारा कई बार जहर दिया जाता रहा, परन्तु उस दिन आश्विन शुदि चतुर्थी संवत् १६४० सन् १८८३ की रात को स्वामी जी दूध पीकर सोने लगे तो नींद नहीं आ सकी। उनके पेट में भयंकर दर्द आरम्भ हो गया। षड्यन्त्रकारियों ने ज्ञान के ऐसे सूर्य को बुझा देने का जघन्य अपराध किया था जो अपनी ज्ञान किरणों से अज्ञान के अंधेरे का अन्त कर देने के लिए कटिबद्ध था। दीपावली के दिन का सवेरा था। प्रसिद्ध डॉ० न्यूटन और प्रख्यात हकीम पीर जी स्वामी की सेवा में उपस्थित हुए। देखते ही दोनों ने कहा इन्हें भयंकर विष दे दिया गया। अन्त में स्वामी जी महामंत्र गायत्री का जाप कर रहे थे। उन्होंने अपनी दोनों नेत्र खोले और उच्चारण किया प्रभु तेरी इच्छा पूर्ण हो। परमात्मा तूने अच्छी लीला की। सांस छोड़ने के साथ ही उनकी पवित्र आत्मा नश्वर शरीर को छोड़कर मुक्त हो गई। उस दिन मंगलवार था और कार्तिक की अमावस्या। दीपावली के दिए टिमटिमाने लगे थे। यह वर्ष संवत् १६४०,३० अक्टूबर १८८३ का था।

स्वामी दयानन्द सरस्वती के विचारों एवं उनकी समाज एवं राष्ट्र सेवा की भावना से प्रभावित महात्मा नारायण स्वामी ने उत्तर भारत के पर्वतीय क्षेत्रों का भ्रमण कर आर्य समाज के प्रचार–प्रसार हेतु अपना सम्पूर्ण जीवन न्यौछावर कर दिया। उन्होंने योग साधना एवं स्वाध्याय हेतु उत्तराखण्ड का भ्रमण किया। हल्द्वानी में आर्य समाज हेतु भूमि की रजिस्ट्री आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त के नाम कराई। अंत में कुटिया बनाने के लिए सबसे अधिक उपयोगी स्थान रामगढ़ तल्ला में नदी के पुल से पूर्व की ओर बड़े नाले के संगम के निकट एक आश्रम की नीव रखी जो आज महात्मा नारायण स्वामी आश्रम के नाम से विख्यात है। वहीं पर ठाकुर कृष्ण सिंह के पुत्र लक्ष्मण सिंह एवं अन्य छात्रों की अंग्रेजी सहित कई धार्मिक ग्रन्थ पढ़ने लगे। राम प्रसाद मुख्तार नैनीताल एवं ठाकुर उदयसिंह रामगढ़ ने नायक जाति और रूढ़िवादी कुरीतियों को समाप्त करने हेतु जो आन्दोलन चला रखा था स्वामी जी के आगमन से आन्दोलन को बल मिला और कन्याओं को वेश्या बनाने का कलंक रामगढ़ ने अपने माथे से दूर करते हुए अपनी ही बिरादरी में विवाह करने का संकल्प लिया। गढ़वाल की डोला–पालकी प्रथा की आड़ में शिल्पकारों पर अनेक अत्याचार हो रहे थे। यहाँ तक कि विवाह शादी में भी शिल्पकार वर–वधू को उनके देवी–देवताओं तथा धर्मस्थलों के सामने डोला–पालकी से उतरना पड़ता था। आर्य समाज के प्रचार से वहां के बहुत से शिल्पकार आर्य धर्म में दीक्षित हो गये थे। जो शिल्पकार के बदले अपने को 'आर्य' (श्रेष्ठ) घोषित करने के अधिकार प्राप्त कर लिये। इस प्रकार कुमायूँ में डोला–पालकी की अपमान जनक प्रथा को भी बन्द कराया।

पर्वतीय क्षेत्र के आर्य समाजों की उपलब्धियाँ – १. भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में सभी वर्गों के स्वतंत्रता सेनानियों को शरण एवं निःशुल्क भोजन। २. नायक जाति की रक्षा हेतु उस जाति की महिला पुरूषों को संरक्षण एवं आर्थिक सहायता। ३. मई १६१८ में गढ़वाल दुर्भिक्ष पीड़ितों की सहायतार्थ स्वामी श्रद्धानन्द की अपील पर आर्य समाज द्वारा पन्द्रह रूपया आठ आने की सहायता भेजना। ४. १६२५ में पं० नारायण दत्त छिम्वाल की अध्यक्षता में एक विशाल दलित जाति सम्मेलन का अयोजन जिसमें कुमायूँ एवं गढ़वाल से हजारों लोगों ने आकर भाग लिया। ५. १६२६ में परगनाधिकारी काशीपुर द्वारा आर्य समाज के समारोह पर लगाये गये प्रतिबन्ध का खुला विरोध। ६. रामनगर आर्य समाज ने जनपद नैनीताल से हैदराबाद सत्याग्रह में जाने वाले दल का सार्वजनिक अभिनन्दन किया। ७. वर्ष १६६३ में आर्य समाज रामनगर ने ढिकुली में ऋषि मेले का आयोजन किया। ८. १६७३ में पं० प्रकाशवीर शास्त्री ने ढिकुली में दयानन्द कीर्तिस्तम्भ नामक विश्व के प्रथम शिलालेख का उद्घाटन किया।

कुमायूँ एवं गढ़वाल मण्डल में आर्य समाज से सम्बद्ध प्रमुख शिक्षण संस्थाएं – दयानन्द विद्या मन्दिर पिथौरागढ़, दयानन्द विद्यामंदिर देवलथल, दयानन्द विद्यामन्दिर मानले, आर्य कन्या पाठशाला एवं अनाथालय अल्मोड़ा, आर्य कन्या इण्टर कालेज देघाट, अल्मोड़ा, ज्ञानोदया पुस्तकालय नैनीताल, शम्भूनाथ रामेश्वरी देवी पुस्तकालय, भवाली, नारायण स्वामी आश्रम रामगढ़, गोमती पूरन प्रसाद आर्य कन्या इण्टर कालेज, रामनगर, दयानन्द बाल मन्दिर रामनगर, ललित महिला आर्य कन्या उ.मा.वि., हल्द्वानी, रूप किशोर लालमणि आश्रम, काशीपुर, छिम्वाल–हुडीवाल सार्वजनकि आर्य पुस्तकालय रामनगर, दयानन्द बाल विद्या मन्दिर रामनगर, दयानन्द बाल विद्या मन्दिर रामनगर, दयानन्द बाल विद्या मन्दिर रूद्रपुर, रूपकिशोर लालमणि आर्य कन्या पाठशाला, रूद्रपुर, दयानन्द आर्य शिशु निकेतन, जसपुर, रामप्यारी आर्य कन्या इ०का० खुड़बुड़ा, देहरादून, आर्य कन्या इण्टर कालेज कोटद्वार, आर्य इण्टर कालेज बहादराबाद, हरिद्वार, आर्य कन्या इण्टर कालेज, हरिद्वार, आर्य विरक्त वानप्रस्थ आश्रम, ज्वलापुर, हरिद्वार, आर्य कन्या पाठशाला इण्टर कालेज, रूड़की, डी.ए.वी. कालेज देहरादून, महात्मा नारायण स्वामी आर्य कनया इ०कालेज, रामगढ़तल्ला, नैनीताल। 'महर्षि दयानन्द सरस्वती हिन्दुस्तान के आधुनिक ऋषियों, सुधारकों, श्रेष्ठ पुरूषों में से एक थे। मैं जैसे–जैसे प्रगति करता हूँ वैसे–वैसे महर्षि का बतलाया मार्ग दिखलाई देता है।'

–महात्मा गांधी।

कालजयी संत महर्षि दयानन्द सरस्वती, महात्मा नारायण स्वामी की संक्षिप्त आत्मकथा एवं कुमाऊँ मण्डल की प्रमुख आर्य समाज नामक पुस्तकों से साभार।

पृथक् प्रायन् 'प्रथमा' देवहूतयोऽकृण्वत श्रवस्यानि दुष्टरा।
न यै शेकुर्यज्ञियां नावमारुहमीर्मैव ते न्यविशन्त केपयः।।

ऋ. १०.४४.६ । अ. २०.६४.६।

विनय

भाइयों! इस संसार–सागर से हमें तरासने वाली नौका यज्ञमयी ही है। हम यदि यज्ञकर्म नहीं करेंगे तो हम मनुष्यत्व को कायम भी नहीं रख सकेंगे, तब हमें नीचे पशुत्व में अघःपतित होना पड़ेगा। देखो, बहुत से 'देव–हूति' पुरूष उन देवलोक, पितृलोक, ब्रह्मलोक आदि दुष्प्राप्य यशोमय उच्च लोकों को पहुच गये हैं, ये लोग यज्ञिय नाव पर चढ़कर ही वहां पहुंचे हैं। इन्होंने अपने में देवों का, दिव्यताओं का, आह्वन किया है। और 'प्रथम' बने हैं।

दूसरी तरफ देखो, वे दुर्भागे मनुष्य हैं जो थोड़ा सा स्वार्थत्याग न कर सकने के कारण, अयज्ञिक हो ऋणबद्ध रहेने के कारण उस नाव का आश्रय नही पा सके हैं, अतः यही बंधे पड़े रह गये हैं। ये विचारे 'केपि' कुत्सिताचरणी लोग यहां भी नीचे घंसते जा रहे हैं, पशुत्व में गि रहे हैं। इनका फिर पवित्र बनना अब अत्यन्त कठिन हो गया है। अतः आओ, मनुष्य योनि पा कर हम कुछ न कुछ तो स्वार्थत्याग करें, इतना यज्ञ कर्म तो करें कि ऋग्बद्ध न बने रहें। हम पर जो माता पिता, गुरू, समाज, राष्ट्र, मनुष्यता, प्रकृतिमाता और परमेश्वर आदि के ऋण हैं उन्हें उतारने के लिए तो अपने स्वार्थों का नित्य हवन किया करें। हम यदि इतना करेंगे, केवल परमावश्यक पवयज्ञों को यथाशक्ति करते रहेंगे तो भी हम इस यज्ञिय नौका पर चढ़ सकेंगे और देवयान लोकों को नहीं तो कम से कम पितृ लोकों को तो जा पहुंचेगें, अपने मनुष्यत्व को तो नहीं खो देवेंगे। भाइयों! यज्ञमयी नौका खड़ी है।

हम चाहें तो देवहूति हो कर, दिव्यस्वभाव धर्मशील होकर, इस नौका द्वारा इस दुस्तर सागर को तरकर ज्ञानैश्चर्यमय उच्च से उच्च लोकों तक पहुंच सकते हैं। नहीं तो फिर यदि हम इस नौका में स्थान न पा सके तो हम ऐसी खराब परिस्थत में आ पड़ेंगे, और वहां ऐसे निर्लज्ज बन जायेगे कि हम कुत्सित अपवित्र कर्मों के करने में ही सुख पावेगें कि हम कुत्सित अपवित्र कर्मों के करने में ही सुख पावेंगे और नीच ही नीचे गिरते जायेंगे, फिर हमारे उद्धार का दूसरा अवसर कितने काल बाद आवेगा यह कौन जानता है? तब हमारे उस पापयोनि–चक्र से निकलने का, इस यज्ञिय नौका में फिर आश्रय पा सकने का दूसरा अवसर कब आवेगा, यह कौन कह सकता है?

आवश्यक सूचना

सभी आर्य बन्धुओं को सूचित किया जाता है कि गतवर्ष की भांति नवशील धाम कल्याणपुर, कानपुर नगर, का वार्षिकोत्सव इस वर्ष भी दिनांक १६ नवम्बर से १८ नवम्बर तक बड़ी धूम धाम से मनाया जायेगा।

इस अवसर पर आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान स्वामी धर्मबन्धु जी महाराज राजकोट, गुजरात तथा प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री भानु प्रकाश आर्य जी पधार रहें हैं। आप धर्म प्रेमी आर्यों से निवेदन है कि इस अवसर पर अपना अमूल्य समय प्रदान कर कार्यक्रम में भाग लें तथा पूर्ण के भागीदार बनें तथा अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करें।

–पं० सुखवीर शास्त्री धर्माचार्य,
नौसिल धाम कल्याणपुर, स्टेशन के पास, कानपुर नगर

"अतिथि-उपदेशक"

१. डा० धीरज सिंह
प्रधान-आर्य प्रतिनिधि सभा, उ०प्र० लखनऊ
२. स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मन्त्री- आर्य प्रतिनिधि सभा, उ०प्र० लखनऊ
३. आचार्य चन्द्रदेव
महोपदेशक- फर्रुखाबाद
४. डॉ० निधि आर्या
महोपदेशिका- दिल्ली
५. श्री ओंकार नाथ शास्त्री
महोपदेशक- बहराइच
६. श्री विमल कुमार आर्य
महोपदेशक- हरदोई
७. श्री संदीप वैदिक
भजनोपदेशक- मुजफ्फरनगर
८. सुश्री किरन आर्या
भजनोपदेशक- कासगंज

❖ ❖ ❖ ❖ ❖

सम्पर्क सूत्र
९४५०३८९५४४, ९४५५७०५९००
संलग्नक : कार्यक्रम पत्रक

!! ओ३म् !!

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

मान्यवर!

सहर्ष सूचित है कि आर्य समाज, हरदोई के १३३वें वार्षिकोत्सव का भव्य आयोजन आश्विन शुक्ल पक्ष अष्टमी, नवमी व दशमी संवत् २०७५ वि० तदनुसार दिनांक १७, १८, व १९ अक्टूबर २०१८ को सम्पन्न होने जा रहा है जिसमें आपकी गरिमामयी उपस्थिति सादर प्रार्थित है।

कृपया परिवार एवं इष्ट-मित्रों सहित पधार कर वैदिक सम्मेलन को सफल बनायें।

साभार!

स्थान : आर्य समाज मन्दिर, हरदोई

राजीव रंजन मिश्र — प्रधान
सीमा मिश्र — मंत्री

जीवन का आनन्द है जीवनचर्या

– श्री कृष्णचन्द्र जी

जीवन में सफलता का एक महान् सूत्र है अपनी जीवनचर्या को सात्विक और संयमित बनाना। धर्मानुकूल जीवन ही हमें आत्मिक, सामाजिक तथा व्यक्तिगत बल प्रदान करता है। संसार, संस्कृति प्रकृति और प्रवृत्ति मनुष्य के जीवननिर्माण में मुख्य भूमिका निभाते हैं। जिनका जीवन संयमित, अनुशासित और नियमित है उन्हें ही परमानन्द की प्राप्ति हो सकती है। समय के प्रत्येक क्षण का सदुपयोग करके ही जीवन को सफल बनाया जा सकता है।

एक दार्शनिक ने ठीक ही कहा है कि "समय वह धन है जिसे अगर नष्ट करोगे तो समय ही एक दिन आपको नष्ट कर देगा" जीवन का आनन्द लेना है तो जीवनचर्या को नियमित एवं योजनाबद्ध तरीके से जीकर ही ले सकते हैं। हम जितने समय जीएं– ज्योति बनकर, लपट बनकर जीएं। ज्योति आत्मशुद्धि से आती है और आत्मशुद्धि तक पहुंचने का बहुत महत्वपूर्ण का स्वाध्याय। सद्साहित्य के स्वाध्याय से सद्विचार आते हैं और सद्विचारों से सही सद्बुद्धि आती है और फिर भी उसके अनुसार सद्कार्य होते हैं। अतः अपनी जीवनचर्या में प्रतिदिन कम से कम आधा घंटा स्वाध्याय के लिए आरक्षित रखना चाहिए। जीवन में अपने अज्ञान के कारण समस्याएं आती हैं। धर्मशास्त्रों के अध्ययन से समस्याओं का निदान होता है। जिससे हमें अपने जीवनदर्शन का पता चलता हैं, हमें आत्मनियंत्रण करना आता है, अपनी इच्छाओं पर संयम करना आता है क्योंकि सुविधाभोगी कभी सुखी नहीं होता है। हमारा अज्ञान ही दुःख है। इस संसार में सबसे ज्यादा सुखी व्यक्ति वह है जो सुख से सोता है और सुख से जागता है, जिसके जीवन में नैतिकता है, ईमानदारी है, प्रामाणिकता है, वह धार्मिक व्यक्ति है। अपने आपको जानना आपने–आपको देखना और अपने–आपको देखना और अपने–आपको समझना ही हमारी जीवनचर्या की सच्चाई है, जीवन का आनन्द है। धर्म का पालन करने वाला जीवित रहकर तो गुणों का अर्जन करता है और मरने के बाद सद्गति को प्राप्त होता है। अपनी जवनचर्या को इस तरह व्यवस्थित रखें कि वर्तमान में ही जीना सीखें अर्थात् हमारा आज अच्छा है तो कल भी अच्छा होगा। दुःख कहीं से नहीं आता है उसे व्यक्ति स्वयं पैदा करता है। अहिंसा का जीवन सीखें। अहिंसा जीवन की ऊर्जा है। जीवन का आनंद है। अपनी जीवनचर्या में स्वार्थ से हटकर परमार्थ की ओर ध्यान देने का दृष्टिकोण रहना चाहिए।

समय सीमित है परन्तु जिम्मेदारियां असीम हैं। अतः हमें सदा यह विचार करते रहना चाहिए कि हमारी गृहस्थी का प्रबन्ध ठीक है या नहीं, बच्चों की शिक्षा ठीक हो रही है या नहीं, कुछ सत्यकार्य किये हैं या नहीं। सज्जनता से व्यवहार करने वाला तथा पूर्ण मनोयोग एवं तत्परता से काम करने वाला अवश्य अपने जीवन में सफल होता है। न तो हमें बहुत आशावादी बनकर अपने–आपको धोखे में डालना चाहिए और न ही किसी कारणवश हताश होकर घबराना चाहिए। अपने गुणों के अनुसार जीवन में सद्कार्य करते हुए आगे बढ़ना चाहिए। अच्छा स्वास्थ्य और अच्छा व्यवहार यही हमारे जीवन का ध्येय होना चाहिए। चिंता नहीं चिंतन होना चाहिए। व्यथा नहीं व्यवस्था करनी चाहिए। समय पर सात्विक भोजन और शुद्ध जल का उपयोग करना चाहिए। उचित व्यायाम्, ध्यान प्राणायाम एवं विश्राम के लिए प्रतिदिन की जीवनचर्या में आवश्यक उपयुक्त समय देना चाहिए। अभारी जीवनचर्या की वास्तवकि सम्पत्ति नेक काम की है। सामर्थ्य से अधिक शारीरिक श्रम नहीं करना चाहिए। किसी का तिरस्कार करना मानवता का अपमान है। आप जो कुछ हैं, वही रहें, सहज रहें, आडम्बर व दिखावा किसी दिन आपको संकट में डाल सकता है।

ईर्ष्या, क्रोध अहंकार हमारी उन्नति में बाधक है। जीवन में जितनी सरलता होगी उतना ही लोगों से प्रेम व्यवहार ज्यादा रहेगा। जीवन का प्रत्येक क्षण अमूल्य है इसके एक–एक पल का उपयोग कर विकास के शिखर पर पहुंचाना चाहिए। प्रातःकाल उठते ही सर्वप्रथम प्रभुस्मरण करना चाहिए। घर में अपने से बड़ों को प्रणाम करने की आदत डालकर चाहिए। अपने कर्त्तव्यों का पालन करते हुए अपने दैनिक कार्यों का शुभारम्भ करना चाहिए। अपने व्यक्तिव को गौरवशाली बनाना चाहिए। समय की एवं बचन की पाबंदी एक ऐसा चारित्रिक गुण हे जो हर समय और हर अवस्था में अनुकरणीय है जिस प्रकार भी हो सके कुछ हानि सहकर भी अपने वचन की पूर्ति एवं समय का पालन करना हमारा दायित्व है।

हमें जीवन को हंसते मुस्कराते हुए जीना है। एक अंग्रेजी की कहावत है" हंसोगे तो संपूर्ण संसार आपके साथ हंसेगा, किंतु यदि रोओगे तो आपके साथ रोने वाला कोई नहीं मिलेगा। हंसना जीवन का आनन्द है। बड़े बुर्जुगों का आदर करते हुए हंसते हंसाते रहिये। हमारी जीवनचर्या में तीन गुण अवश्य रहने चाहिए।

१. क्षमा करना, २. सहन करना, ३. सेवा करना।

जीवन में वास्तव में आवश्यकताएं तो बहुत कम होती हैं, अपेक्षाएं ही अधिक होती हैं। व्यसन के जैसा कोई पाप नहीं। व्यसन को छोड़े बिना ईश्वरभक्ति हो ही नहीं सकती। रोज दूसरों में अगर हम गुण देखते हैं तो यह हमारी सज्जनता एवं उदारता है। दूसरों की संकट के समय मदद करना ही मानता है। किसी को ऐसी बात कभी नहीं कहनी चाहिए जिससे उसका जी दुखे। सकारात्मक सोच ही जीवन हे, नकारात्मक सोच मृत्यु समान है। जो स्नेह से बंधा हो, वहीं बन्धु है, जो विपत्ति में साथ दे वहीं मित्र है।

शरीर का किसी भी क्षण नाश हो सकता है। इस बात को ख्याल रखते हुए प्रतिक्षण का उपयोग करते हुए वर्तमान को अपना बना लेना ही महान् कौशल वाली जीवनचर्या है, जीवन–शैली है। प्रतिदिन प्रातः–काल या सायंकाल एकांत स्थान में शांतचित होकर नेत्र बंद कर यदि आप कुछ क्षण संकल्प, शुभ विचार और शुभभावना में विचरण करें तो आपके भीतर ज्ञान का द्वार खुलेगा और आपका महसूस होगा कि आपके मन में उत्तम संस्कारों की उत्पत्ति हो रही है। आप शिवसंकल्प द्वारा उत्तरोत्तर अध्यात्मचेतना की ओर अग्रसर हो रहे हैं। यदि आप अपना प्रत्येक कार्य ईमानदारी व कर्त्तव्यपरायणता के साथ करेंगे तो आपके हृदय से पश्चाताप लोभ, निराशा, प्रलोभन भावनाएं, चिंताएं आदि दूर हो जायेंगी और आप आध्यात्मिक उच्चशिखर पर आरूढ़ होकर दिव्य आनंद, प्रेम, शांति और निर्भयता का अनुभव करेंगे।

पृष्ठ १ का शेष

श्रीमद् दयानन्द वैदिक गुरूकुल परिषद् का ...

उस हैदराबाद को देखने का सौभाग्य मिला और वहां पूरे देश से पधरे गुरूकुलों के संचालक, अधिष्ठाता प्रबन्धक और प्राचार्यों / आचार्यों के दर्शन करने का भी सौभाग्य एक साथ ही प्राप्त हो गया।

दिल्ली हवाई अड्डे पर स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी प्रणवानन्द जी, स्वामी हरिदास जी, आचार्या सुकामा जी आचार्या पवित्रा विद्यालंकार जी, आचार्य धनञ्जय जी के साथ हमें यात्रा करने का सौभाग्य मिला वहाँ हैदराबाद हवाई अड्डे पर भी कई आचार्यों के दर्शन हुए और सीधे श्री पं० नरेन्द्रभवन जाकर विश्राम किया।

कार्यक्रम का शुभारम्भ यज्ञ द्वारा हुआ यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य सोमदेव जी मुम्बई थे तत्पश्चात् प्रातराश करके सम्मेलन का विधिवत् उद्घाटन किया गया। सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी स्वामी धर्मानन्द जी उड़ीसा स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती ने दीप प्रज्जवलन किया। डॉ० आनन्द कुमार जी पूर्व आई.जी.एवं धनञ्जय आचार्य ने संचालन किया। आर्य प्रतिनिधि सभा तेलांगना के अध्यक्ष श्री लक्ष्मण सिंह एवं मन्त्री श्री विट्ठलराव आर्य ने सभी विद्वान् आचार्यो को फल, नारियल एवं शाल तथा एक बैंग (थैला) भेंट किया भोजन अतिथ्य निवासादि की व्यवस्था अत्यन्त सुन्दर और प्रशंसनीय रही। आचार्य सोमदेव जी ने गठन एवं उद्देश्य पर प्रकाश डाला तथा बताया कि संरक्षक श्री स्वामी आर्यवेशजी, स्वामी धर्मानन्द जी तथा श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल जी रहेगें / अध्यक्ष श्री स्वामी प्रणवानन्द जी दिल्ली उपाध्यक्ष स्वामी धर्मेश्वरानन्द गु०पू०उ०प्र०, आचार्या सूर्यादेवी चतुर्वेदा, मन्त्री डा. आनन्द कुमार पूर्व आई.जी. सह मन्त्री डॉ. धनंजय आचार्य देहरादून, कोषाध्यक्ष जयेन्द्र आचार्य नोएड़ा संयोजक सोमदेव शास्त्री मुम्बई रहेंगे। उपमंत्री सुमेधा आचार्य कन्या गु० च्योटीपुरा एवं शेष सभी आचार्य सदस्य के रूप में समिति कार्यकारिणी में रहेंगे। उपमन्त्री सुमेधा आचार्य कन्या गु० च्योटीपुरा एवं शेष सभी आचार्य नोएडा संयोजक सोमदेव शास्त्री मुम्बई रहेगें। उपमन्त्री सुमेधा आचार्य कन्या गु० चोटीपुरा एवं शेष सभी आचार्य सदस्य के रूप में समिति कार्यकारिणी में रहेगें। संविधान सुनाकर सर्वसम्मति से पुष्ट किया गया। और पंजीकरण कराने की अनुमति पास की गई पाठ्यक्रम की भी सर्व सम्मति से पुष्टी की गई कुछ विद्वानों के विचारों से संशोधन करते हुए प्रस्ताव स्वीकृत हुआ सार्वदेशिक सभा (२) के मन्त्री प्रकाश आर्य ने भी आकर अपना समर्थन एवं सहयोग प्रदान किया। खेलकूद एवं बौद्धिक प्रतियोगितायें वर्ष में एक बार अवश्यमेव हुआ करेगी परिषद् के साथ जो संस्था सहयोग करेगी उसका स्वागत है इस वर्ष रामपाल शास्त्री जी दिल्ली ने एवं डा० जयेन्द्र आचार्य ने प्रतियोगिताओं के कराने का आश्वासन दिया।

वक्ताओं में सर्वप्रथम सस्वर वेदपाठ के बाद श्री विट्ठल राव जी स्वामी आर्य वेश जी, स्वामी धर्मानन्द जी, डा. सोमदेव शास्त्री हैदराबाद, डा. आनन्द कुमार दिल्ली, डा. धनन्जय आचार्य, आ. सुमेधा जी, डा. जयेगन्द्र आचार्य, आ० उदयन शास्त्री, उद्गीथानन्दजी उ.प्र. ब्र. कोमलकुमार नोएडा, आ. योगेश कुमार शास्त्री पंजाब आनन्द प्रकाश आचार्य आन्ध्रप्रदेश, ज्ञानवीर पुरूषार्थी उड़ीसा, गु० झज्जर, प्रियंवदा जी बिजनौर, बिजेन्द्र सिंह प्राचार्य गु० कांगड़ी, विजयदेव–आचार्य बदायूं, पवित्रा वेदालंकार गु. हाथरस उ०प्र०, आ० सुकामाजी गु० हरयाणा, प्रकाश आर्य मन्त्री सार्वदेशिक सभा आपने गुरूकुलों को नैट से जोड़ने का सुझाव दिया और नैट पर ही पढ़ाई की जाये सी.सी.टी.वी. कैमरे प्रत्येक गुरूकुल में हो पढ़ाई की सीड़ी तैयार करके पढ़ाया जाये स्वामी ब्रह्मानन्द जी बडलूर, सुशीलकुमार बिहार, डॉ. धारणा जी राजस्थान, डा. नागेन्द्र जी अयोध्या उ०प्र०, गायत्री वारणसी, डॉ. सूर्यादेवी चतुर्वेदा, आ. चैतन्य देव वैश्वानर गु० भैय्या चावड़ रवीन्द्र शास्त्री गु. जसान हरयाणा, आ. भद्रकाम वर्णी दिल्ली, आ.शम्भु नाथ जी हैदराबाद, धर्मेश्वरानन्द सरस्वती दिल्ली, डॉ० धर्मेन्द्र शास्त्री दिल्ली, डॉ. सोमदेव शास्त्री जी मुम्बई सबसे अन्त में पूज्य स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी ने अध्यक्षीय भाषण में सभी को संगठन बनाने का धन्यवाद दिया तथा भविष्य में अपनी एकरूपता एवं आत्मीयता का परिचय देते हुए आर्ष परम्परा की रक्षा करेंगे ऐसा मुझे पूरा विश्वास है। इस प्रकार प्रथम अधिवेशन एक गरिमा युक्त वातावरण में सम्पन्न हुआ आर्य प्रतिनिधि सभा तेलांगना का हार्दिक धन्यवाद करते हैं।

रामायणकालीन वैदिक संस्कृति

सर्वमित्र आर्य, लखनऊ

बाल्मीकि रामायण से विदित होता है कि उस काल में आर्यों की उपासना सन्ध्या के रूप में होती थी। जप, प्राणायाम तथा, अग्निहोत्र के भी विपुल उल्लेख मिलते हैं। पौराणिक मूर्तिपूजा, व्रत, तीर्थ, नामस्मरण या कीर्तन रूप में धार्मिक कृत्य का वर्णन मूलतः नहीं है। क्षणिक उल्लेख जो इस सम्बन्ध में मिलते भी हैं वे अप्रासंगिक प्रक्षेप या मूलकथा से असम्बद्ध हैं।

ईशस्तुति, सन्ध्या, गायत्री जप, अग्निहोत्र और प्राणायाम के कुछ प्रसंग द्रष्टव्य हैं–

कैशल्या–सुप्रजा–राम पूर्वा सन्ध्या प्रवर्तते।

उत्तिष्ठ नरशार्दूल! कर्तव्यं दैवमाह्निकम्। (बालकाण्ड ३३/२)

भावार्थ– महर्षि विश्वामित्र ने कहा है कौशल्या नन्दन राम! प्रातः कालीन सन्ध्या का समय हो रहा है। हेनरशार्दूल! उठो और नैत्यिक कर्तव्य–सन्ध्या और देवयज्ञ करो।

तस्यर्षेः परमोदारं वचः श्रुत्वा नरोत्तमौ।

स्नात्वा कृतोदकौ वीरौ जेपतुः परमं जपम्। बाल. का. २३/३

भावार्थ ऋषि विश्वामित्र के इस उदार वचनों को सुनकर दोनों भाई राम और लक्ष्मण उठे, स्नान आदि से निवृत्त होकर परम जप गायत्री का जाप किया।

कुमारावपि तां रात्रिसुषित्वा सुसमाहितौ।

प्रभातकाले चोत्थाय पूर्वां सन्ध्यामुपास्य च।।३१

प्रशुची परमं जाप्यं समाप्य नियमेन च।

हुताग्निहोत्रमासीनं विश्वमित्रमवन्दताम्।।३१
बाल. का. २६वां सर्ग

भावार्थ– राम, लक्ष्मण दोनों राजकुमार सावधानी के साथ रात्रि व्यतीत करके प्रातः काल उठे और सन्ध्योपासना की। अत्यन्त पवित्र होकर परम जप गायत्री का नियमपूर्वक उन्होंने जप किया और उसके बाद अग्निहोत्र करके बैठे हुए गुरू विश्वामित्र को अभिवादन किया।

आश्वासितो लक्ष्मणेन रामः सन्ध्यामुपासत। युद्धकाण्ड ५/२३

भावार्थ– सीता के शोक से दुःखी राम ने लक्ष्मण द्वारा धैर्य बंधाने पर आश्वासित सन्ध्योपासना की।

सीता को खोजते हुए हमनुमान अशोकवाटिका में एक पवित्र सुन्दर नदी को देखकर सोचते हैं–

सन्ध्याकालमनाः श्यामा ध्रवमेष्यति जानकी।

नदीं चेमां शुभजलां सन्ध्यार्थे वरवर्णिनी। सुन्दरकाण्ड १४/४१

भावार्थ– यदि सीता जीवित होंगी तो प्रातःकालीन सन्ध्या के लिए इस सुन्दर जलवाली नदी के तट पर, सन्ध्या के योग्य इस स्थल पर अवश्य आयेंगी।

तस्मिन् कालेपि कौशल्या तस्थावामीलितेक्षणा।

प्राणायामेन पुरूषं ध्यायमाना जनार्दनम्।। अयो०४/३२–३३

भावार्थ– श्रीराम जब कौशल्या जी के भवन में गये उस समय कौशल्या नेत्र बन्द किये ध्यान लगाए बैठी थीं और प्राणायाम के द्वारा परमपुरूष परमात्मा का ध्यान कर रहा था।

सा क्षौमवसना ह्रष्टा नित्यं व्रतपरायणा।

अग्नि जुहोति स्म सदा मन्त्रवत्कृतमङ्गला।।

–अयो० २०/१५

भावार्थ– रेशमी वस्त्र पहनकर राममाता कौशल्या प्रसन्नता के साथ निरन्तर व्रतपरायण होकर मंगल कृत्य पूर्ण करने के पश्चात् मन्त्रोचारणपूर्वक उस समय अग्नि में आहुति दे रही थीं।

गते पुरोहिते रामः स्नातो नियतमानसः।

सह पत्न्या विशालाक्ष्या नारायणमुपागतम्।।

अयो० ६/१

भावार्थ–पुरोहित के चले जाने पर श्रीराम ने स्नान करके नियत मन से विशाललोचना पत्नि सीता सहित परमात्मा की उपासना की।

२. वेद वेदांग का अध्ययन–

रक्षिता स्वस्य धर्मस्य स्वजनस्य च रक्षिता।

वेदवेदाङ्गतत्त्वज्ञो धनुर्वेदे च निष्ठितः।। बाल० १/१४

भावार्थ राम स्वधर्म और स्वजनों के पालक वेद–वेदागों के तत्त्ववेत्ता तथा धनुर्वेद में प्रवीण थे।

सर्वविद्याव्रतस्नातो यथावत् साङ्गवेदवित्।। अयो० १/२०

भावार्थ –श्रीराम सर्वविद्याव्रतस्नातक तथा छहों अंगों सहित सम्पूर्ण वेदों के यथार्थ ज्ञाता थे।

अस्मिन् च चलते धर्मो यो धर्म नातिवर्तते।

यो ब्राह्ममस्त्रं वेदांश्च वेदविदां वरः।। युद्धकाण्ड २७/२१

भावार्थ–धर्म श्रीराम से कभी अलग नहीं होता। श्रीराम धर्म का कभी उल्लंघन नहीं करते। वे ब्रह्मास्त्र और वेद दोनों के ज्ञाता थे तथा वेदवेत्ताओं में श्रेष्ठ थे।

३. रावण भी वेदविद्याव्रत स्नातक था

वेदविद्यावर्तस्नातः स्वकर्मनिरतस्तथा।

स्त्रियः कस्माद् वधं वीर! मन्यसे राक्षसेश्वर (युद्धकाण्ड ६२/६४

भावार्थ– सुपार्श्व नामक बुद्धिमान् रावण के मन्त्री ने रावण से कहा हे रावण! तू वेदविद्याव्रतस्नातक तथा स्वकर्मपरायण होकर स्त्रीवध (सीता का वध) क्यों करना चाहता है?

इस प्रकार रावण वेदविद्यावित् होने पर भी पापी क्यों माना जाता है? इसका उत्तर हनुमान के निम्न कथन से मिलता है–

अह रूपमहो धैर्यमहो सत्त्वमहो द्युतिः।

अहो राक्षसराजस्य सर्वलक्षणायुक्ता।।१७

यद्यधर्मो न बलवान् स्यादयं राक्षसेश्वरः।

स्यादयं सुरलोकस्य सशक्रस्यापि रक्षिता।। सुन्दर का.४६वां सर्ग

भावार्थ– रावण को देखकर हनुमान मुग्ध हो जाते हैं। वे कहते हैं अहो रावण का रूप सौन्दर्य! अहो धैर्य! कैसी अनुपम शक्ति! और कैसा आश्चर्य जनक तेज! राक्षसराज रावण का राजोचित सर्वलक्षणों से सम्पन्न होना कितने आश्चर्य की बात है। यदि इसमें अधर्म प्रबल न होता तो यह इद्रसहित देवलोक का भी स्वामी बन सकता था।

स्यादयं सुरलोकस्य सशक्रस्यापि रक्षिता।।१८।। सुन्दर का. ४६वां सर्ग

भावार्थ– रावण को देखकर हनुमान मुग्ध हों जाते हैं। वे कहते हैं–अहो रावण का रूप सौन्दर्य! अहो धैर्य! कैसी अनुपम शक्ति! और कैसा आश्चर्यजनक तेज! राक्षसराज रावण का राजोचित सर्वलक्षणों से सम्पन्न होना कितने आचर्य की बात है। यदि इसमें अधर्म प्रबल न होता तो यह इन्द्रसहित देवलोक का भी स्वामी बन सकता था।

अतः वेदवेत्ता होने पर भी अपनी आचारहीनता से रावण अधर्मी और पापी माना गया।

कहा भी गया है–

आचारहीनं न पुनन्ति वेदाः। मनुस्मति ६/३

आचार से हीन दुराचारी व्यक्ति को वेद भी पवित्र नहीं कर सकते। –आचार्य विश्वमित्र आर्य

समस्त आर्य समाजों/जिला आर्य प्रतिनिधि सभाओं को आवश्यक सूचना एवं निर्देश

आर्य प्रतिनिधि सभा, उ०प्र०, नारायण स्वामी भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ से सम्बद्ध उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखण्ड में कार्यरत् आर्य समाजों एवं जिला आर्य प्रतिनिधि सभाओं के प्रधान/ मंत्री/ कोषाध्यक्ष को सूचित किया जाता है, संस्था आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०, लखनऊ द्वारा प्रदेश में कार्यरत् सभी आर्य समाजों एवं जिला सभाओं को बावत वर्ष २०१६ एवं वित्तीय वर्ष २०१७–१८ हेतु वार्षिक चित्र प्रेषित किये जा रहे हैं। सभी आर्य समाजों के पदाधिकारियों को निर्देशित किया जाता है, कि वे अपनी–अपनी आर्य समाजों का वार्षिक विवरण भरकर संस्था कार्यालय में दिनांक–३० नवम्बर, २०१८ तक वार्षिक चित्र (वार्षिक विवरण) एवं दशांश जमा करके रसीद प्राप्त कर लें तथा निम्न अभिलेख सभा कार्यालय में उपलब्ध करा दें–

०१. सभासदों की सूची तथा सभासद बनाये जाने की तिथि अंकित किया जाना आवश्यक है।

०२. साधारण सदस्यों की सूची तथा सभासद बनाये जाने की तिथि अंकित किया जाना आवश्यक है।

०३. वार्षिक चुनाव कार्यवाही पंजिका की छायाप्रति।

०५. चल–अचल सम्पत्तियों का विवरण।

०६. आर्य समाज के प्रधान, मन्त्री एवं कोषाध्यक्ष के नाम एवं मोबाइल नम्बर एवं आर्य समाज का स्पष्ट पता।

०७. आर्य समाज में कितने कक्ष, यज्ञशाला एवं किरायेदार हैं और कितना किराया देते हैं, का विवरण।

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, सभा मन्त्री

प्रेस विज्ञप्ति

मैं रूचिता चौधरी पुत्री स्व. श्री रामजी निवासी C-4/1129 बसन्त खण्ड गोमती नगर विस्तार लखनऊ, सूचित करती हूँ। कि अजीत कुमार पुत्र टेकचन्द्र मूल निवासी ग्राम – कनौंजा, पो0– थाना मुराद नगर जिला गाजियाबाद द्वारा मेरे पते का किसी प्रकार से प्रयोग न किया जाये वो यहां नहीं रहते है। भविष्य में कोई भी पत्राचार इस पते पर न किया जाय।

पंजी०सं० आर.एन.आई.-२२४१/५७ आर्य मित्र १६ अक्टूबर, २०१८ पोस्टल रजि.जी.पी.ओ. लखनऊ/एन.पी.-१४/२०१६-१८ एक प्रति ₹ २.००

आर्य मित्र

नारायण स्वा... ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूरभाष : ०५२२-२२८६३२८
का० प्रधान- ०६... ७४४३४१, मंत्री- ०६८३७४०२१९२, व्यवस्थापक- ६३२०६२२२०५
ई-मेल : apsabhaup86@gmail.com ई-मेल आर्य मित्र aryamitrasaptahik@gmail.com

सेवा में,

....
....

राष्ट्रीय पुस्तक मेला में जिला आर्य प्रतिनिधि सभा लखनऊ का एकदिवसीय कार्यक्रम की झलकियां

श्रीमद् दयानन्द वैदिक गुरुकुल परिषद् के राष्ट्रीय अधिवेशन की झलकियां

आर्य समाज अमरोहा के वार्षिक निर्वाचन एवं अधिवेशन की झलकियां

ओ३म्

वैदिक विचारधारा को विश्वभर में गुंजायमान करने के संकल्प को साथ लेकर

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में

भारत की राजधानी दिल्ली में विश्वभर के आर्यों का महाकुंभ

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन
25, 26, 27, 28 अक्टूबर, 2018

तदनुसार कार्तिक कृ० १, २, ३, ४ विक्रमी सम्वत् २०७५

विश्व शान्ति यज्ञ, योग तथा सामाजिक व राष्ट्रीय विषयों पर
तपोनिष्ठ संन्यासियों एवं वैदिक विद्वानों के प्रेरणास्पद उद्बोधन एवं प्रवचन
लाखों की संख्या में भाग लेकर कार्यक्रम को सफल बनायें।

-: सम्मेलन स्थल :-
स्वर्ण जयंती पार्क, रोहिणी, सैक्टर-10, दिल्ली

निवेदक-

डॉ० धीरज सिंह आर्य
प्रधान- आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०

अरविन्द कुमार आर्य
कोषाध्यक्ष- आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री- आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०

आर्य प्रतिनिधि सभा, उ०प्र० 5 मीराबाई मार्ग, लखनऊ

आवश्यक सूचना

आर्य समाज बुढ़ाना मुज्जफर नगर में अर्थवेद पारायण यज्ञ एवं रामायण दिनांक १२, १३, १४ एवं १५ नवम्बर, २०१८ में सम्पन्न होगा। कार्यक्रम एवं स्थान निम्नवत हैं :-

१. दिनांक १२ नवम्बर, २०१८ को आर्य समाज एवं आर्य कन्या इ.का. बुढ़ाना मुज्जफर नगर में।
२. दिनांक १३ नवम्बर, २०१८ को डी.ए.वी. इण्टर कालेज बुढ़ाना मुजफ्फर नगर में।
३. दिनांक १४ नवम्बर, २०१८ को डी.ए.वी. डिग्री कालेज में।
४. दिनांक १५ नवम्बर, २०१८ को डी.ए.वी. कालेज में।

—अरविन्द कुमार
कोषाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा, उ०प्र०

स्वामी-आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक - मुद्रक -प्रकाशक -श्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शारदा प्रिंटिंग प्रेस, माडल हाउस, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है- सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।